

विहांव जो अंगलु (१३२)

होता है कौन विधि ब्याहु कहो मो सों मैया।

मो मन सुनन उमाहु कहो मो सों मैया॥

सदां कहती थी तोंहि सिखाऊंगी सजन घर की रीति बताऊंगी

अब न विलम्ब करो कहो मो सों मैया॥

ठोड़ी गहि मातु मोहन मनाव ही दाऊ न सुन ले मैया धीरे समुझाव ही

जैसे रहे मेरी लाज कहो मो सों मैया॥

ब्याह गयो न कभी बना न बराती मोहि चिढ़ावें रोजु संग के साथी

भोरो है सुनु बृज राज कहो मो सों मैया॥

दूलह बनि जब बरसाने जाऊं क्या क्या कहूं और कैसे बरिताऊं

कैसे करूं खान पान कहो मो सों मैया॥

बरसाने की सुकुमारी नारी दे दे गुलचा गाएंगी गारी

कैसो करूं व्यवहार कहो मो सों मैया॥

सजन घरि कैसे चलना चाहिए कैसे ऊंचे के प्रेम को गहिए

जाने ज्यों गुणनि भण्डार कहो मो सों मैया॥

हल्दी मंडित गात मनोहर तोतिले बैन कहत मधुर स्वर
मैया हींय हुलसाइ कहो मो सों मैया॥

भूषण वसन दे ग्वाल रिझाओ मेरी न निंदा करे यूं समुझावो
ससुर हैं बड़े सरदार कहो मो सों मैया॥

मातु मुदित भई सुनि मृदु बानी कण्ठ लगाइ लाल प्रेम समानी
उर अनुराग बढ़ाइ कहो मो सों मैया॥